पूरा नाम	केदारनाथ अग्रवाल
अन्य नाम	केदारनाथ
जन्म	1 अप्रैल, 1911
जन्म भूमि	कमासिन गाँव, बाँदा, उत्तर प्रदेश
मृत्यु	22 जून, 2000
अभिभावक	हनुमान प्रसाद अग्रवाल और घसिट्टो देवी
कर्म भूमि	भारत
कर्म-क्षेत्र	कवि, लेखक
मुख्य रचनाएँ	अपूर्वा, युग की गंगा, फूल नहीं रंग बोलते हैं, पंख और पतवार, गुलमेंहदी, हे मेरी तुम!, बोलेबोल अबोल, जमुन जल तुम, मार प्यार की थापें आदि।
भाषा	हिंदी
विद्यालय	इलाहाबाद विश्वविद्यालय
शिक्षा	बी.ए., वकालत
पुरस्कार-उपाधि	सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, हिंदी संस्थान पुरस्कार, तुलसी पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार

नागरिकता	भारतीय
अन्य जानकारी	केदार शोधपीठ की ओर हर साल एक साहित्यकार को लेखनी के लिए 'केदार सम्मान' से सम्मानित किया जाता है।
इन्हें भी देखें	कवि सूची, साहित्यकार सूची

केदारनाथ अग्रवाल (अंग्रेज़ी: *Kedarnath Agarwal*, जन्म: 1 अप्रैल, 1911; मृत्यु: 22 जून, 2000) प्रगतिशील काव्य-धारा के एक प्रमुख कवि हैं। उनका पहला काव्य-संग्रह 'युग की गंगा' देश की आज़ादी के पहले मार्च, 1947 में प्रकाशित हुआ। हिंदी साहित्य के इतिहास को समझने के लिए यह संग्रह एक बहुमूल्य दस्तावेज़ है। केदारनाथ अग्रवाल ने मार्क्सवादी दर्शन को जीवन का आधार मानकर जनसाधारण के जीवन की गहरी व व्यापक संवेदना को अपने कवियों में मुखरित किया है। कवि केदारनाथ की जनवादी लेखनी पूर्णरूपेण भारत की सोंधी मिट्टी की देन है। इसीलिए इनकी कविताओं में भारत की धरती की सुगंध और आस्था का स्वर मिलता है।

रघुवीर सहाय

जन्म	:	9 दिसंबर 1929, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
भाषा	:	हिंदी
विधाएँ	:	कविता, कहानी, निबंध
प्रकाशित कृतियाँ	:	**कविता संग्रह** : सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो, हँसो, जल्दी हँसो, लोग भूल गए हैं, कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ, एक समय था **कहानी संग्रह** : रास्ता इधर से है, जो आदमी हम बना रहे हैं **निबंध संग्रह** : दिल्ली मेरा परदेस, लिखने का कारण, ऊबे हुए सुखी, वे और नहीं होंगे जो मारे जाएँगे, भँवर, लहरें और तरंग, अर्थात, यथार्थ का अर्थ **अनुवाद :** बरनमवन (शेक्सपियर के नाटक 'मैकबेथ' का अनुवाद), तीन हंगारी नाटक
पुरस्कार/ सम्मान	:	साहित्य अकादमी, 1982 ('लोग भूल गए हैं' पर)
निधन	:	30 दिसंबर 1990, दिल्ली
विशेष	:	'दूसरा सप्तक' के कवि। 'दिनमान' का संपादन (1979-1982)। संपूर्ण रचनाएँ रघुवीर सहाय रचनावली (संपादन : सुरेश शर्मा)) में संकलित।

हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार रघुवीर सहाय (जन्म- 9 दिसंबर, 1929 लखनऊ - मृत्यु- 30 दिसंबर, 1990 दिल्ली) की गणना हिंदी साहित्य के उन कवियों में की जाती है जिनकी भाषा और शिल्प में पत्रकारिता का प्रभाव होता था और उनकी रचनाओं में आम आदमी की व्यथा झलकती थी।

विषय सूची [छुपाएँ]

1 प्रभावशाली कवि
2 जन्म
3 शिक्षा
4 कार्यक्षेत्र

प्रभावशाली कवि

रघुवीर सहाय एक प्रभावशाली कवि होने के साथ ही साथ कथाकार, निबंध लेखक और आलोचक थे। वह प्रसिद्ध अनुवादक और पत्रकार भी थे। उन्हें वर्ष 1982 में उनकी पुस्तक 'लोग भूल गये हैं' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया। उनकी अन्य पुस्तकें 'आत्महत्या के विरूद्ध', 'हंसो हंसो जल्दी हंसो' और 'सीढियों पर धूप में' भी काफी चर्चित रहीं। सहाय का सम्बंध उस पीढी से था जो स्वतंत्रता के बाद काफी सारी आकांक्षाओं के साथ पली-बढी थी। सहाय ने उन्हीं

आकांक्षाओं के साथ पली-बढी थी। सहाय ने उन्हीं आकांक्षाओं को अपनी कविताओं में व्यक्त किया है। सहाय की गिनती ऐसे कवियों में भी की जाती है जो प्रेरणा के लिए अतीत में झांकने के बजाय भविष्योन्मुखी रहना पसंद करते थे।

जन्म

रघुवीर सहाय का जन्म 9 दिसंबर, 1929 को लखनऊ में हुआ। उन्होंने 1955 में विमलेश्वरी सहाय से विवाह किया।

शिक्षा

रघुवीर सहाय 1951 में 'लखनऊ विश्वविद्यालय' से अंग्रेज़ी साहित्य में एम. ए. किया और साहित्य सृजन 1946 से प्रारम्भ किया। अंग्रेज़ी भाषा में शिक्षा प्राप्त करने पर भी उन्होंने अपना रचना संसार हिंदी भाषा में रचा। 'नवभारत टाइम्स के सहायक संपादक तथा 'दिनमान साप्ताहिक के संपादक रहे। पश्चात स्वतंत्र लेखन में रत रहे। इन्होंने प्रचुर गद्य और पद्य लिखे हैं। रघुवीर सहाय 'दूसरा सप्तक के कवियों में हैं।[1]

कार्यक्षेत्र

रघुवीर सहाय दैनिक 'नवजीवन' में उपसंपादक और सांस्कृतिक संवाददाता रहे। 'प्रतीक' के सहायक संपादक, आकाशवाणी के समाचार विभाग में उपसंपादक, 'कल्पना'[2] तथा आकाशवाणी[3], में विशेष संवाददाता रहे। 'नवभारत टाइम्स', दिल्ली में विशेष संवाददाता रहे। समाचार संपादक, 'दिनमान' में रहे। रघुवीर सहाय 'दिनमान' के प्रधान संपादक 1969 से 1982 तक रहे। उन्होंने 1982 से 1990 तक स्वतंत्र लेखन किया।

सुदामा पांडेय धूमिल

सुदामा पांडेय 'धूमिल' का जन्म 9 नवंबर 1936 को वाराणसी के निकट गाँव खेवली में हुआ था। उनके पूर्वज कहीं दूर से खेवली में आ बसे थे। धूमिल के पिता शिवनायक पांडे एक मुनीम थे व इनकी माता रजवंती देवी घर-बार संभालती थी। जब धूमिल ग्यारह वर्ष के थे तो इनके पिता का देहांत हो गया। आपका बचपन संघर्षमय रहा।

धूमिल का विवाह १२ वर्ष की आयु में मूरत देवी से हुआ।

१९५३ में जब आपने हाई स्कूल उत्तीर्ण किया तो आप गांव के पहले ऐसे व्यक्ति थे जिसने मैट्रिक पास की थी। आर्थिक दबावों के रहते वे अपनी पढ़ाई जारी न रख सके। स्वाध्याय व पुस्तकालय दोनों के बल पर उनका बौद्धिक विकास होता रहा।

रोजगार की तलाश 'धूमिल' को कलकत्ता ले आई। कहीं ढँग का काम न मिला तो लोहा ढोने का काम कया व मजदूरों की ज़िंदगी को करीब से जाना। इस काम की जानकारी उनके सहपाठी मित्र तारकनाथ पांडे को मिली तो उन्होंने अपनी जानकारी में उन्हें एक लकड़ी की कम्पनी (मैसर्स तलवार ब्रदर्ज़ प्रा. लि० में नौकरी दिलवा दी। वहाँ वे लगभग डेढ वर्ष तक एक अधिकारी के तौर पर कार्यरत रहे। इसी बीच अस्वस्थ होने पर स्वास्थ्य-लाभ हेतु घर लौट आए। बीमारी के दौरान मालिक ने उन्हें मोतीहारी से गौहाटी चले जाने को कहा। 'धूमिल' ने अपने अस्वस्थ होने का हवाले देते हुए इनकार कर दिया।

मालिक का घमंड बोल उठा, "आई एम पेइंग फॉर माई वर्क, नॉट फॉर योर हेल्थ!"

'धूमिल' के स्वाभिमान पर चोट लगी तो मालिक को खरी-खरी सुना दी,"बट आई ऐम वर्किंग फॉर माई हेल्थ, नॉट वोर योर वर्क।"

फिर क्या था साढ़े चार सौ की नौकरी, प्रति घन फुट मिलने वाला कमीशन व टी. ए, डी. ए....'धूमिल' ने सबको लात लगा दी। इसी घटना से 'धूमिल' पूंजीपतियों और मज़दूरों के दृष्टिकोण व फ़ासले को समझे। अब उनका जनवादी संघर्ष उनकी कविता में आक्रोश बन प्रकट होने वाला था। धूमिल को हिंदी कविता के संघर्ष का कवि कजा जाता है।

१९५७ में 'धूमिल' ने कांशी विश्वविद्यालय के औद्योगिक संस्थान में प्रवेश लिया। १९५८ में प्रथम श्रेणी से प्रथम स्थान लेकर 'विद्युत का डिप्लोमा' लिया। वहीं विद्युत-अनुदेशक के पद पर नियुक्त हो गए। फिर यही नौकरी व पदोन्नति पाकर वे बलिया, बनारस व सहारनपुर में कार्यरत रहे। १९७४ में जब वे सीतापुर में कार्यरत थे तो वे अस्वस्थ हो गये। अपनी स्पष्टवादिता व अखड़पन के कारण उन्हें अधिकारियों का कोपभाजन होना पड़ा। उच्चाधिकारी अपना दबाव बनाए रखने के कारण उन्हें किसी न किसी ढँग से उत्पीड़ित करते रहते थे। यही दबाव 'धूमिल' के मानसिक तनाव का कारण बन गया। अक्टूबर १९७४ को असहनीय सिर दर्द के कारण 'धूमिल' को काशी विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज में भर्ती करवाया गया। डॉक्टरों ने उन्हें ब्रेन

ट्यूमर बताया । नवंबर १९७४ को उन्हें लखनऊ के 'किंग जार्ज मेडिकल कॉलेज में भर्ती करवाया गया। यहाँ उनके मस्तिष्क का ऑपरेशन हुआ लेकिन उसके बाद वे 'कॉमा' में चले गए और बेहोशी की इस अवस्था में ही **१० फरवरी १९७५** को वे काल के भाजक बन गए।

धूमिल की साहित्यिक कृतियाँ:

अभी तक धूमिल के चार काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें सम्मिलित हैं -

संसद से सड़क तक (इसका प्रकाशन स्वयं 'धूमिल ने किया था)
कल सुनना मुझे (संपादन - राजशेखर)
धूमिल की कविताएं (संपादन - डॉ शुकदेव)
सुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र (संपादन - रत्नशंकर। रत्नशंकर 'धूमिल' के पुत्र हैं।)

उपरोक्त कृति 'संसद से सड़क तक' का प्रकाशन स्वयं 'धूमिल ने किया था व शेष का प्रकाशन मरणोंपरांत विभिन्न प्रकाशकों द्वारा किया गया।

दुष्यंत कुमार

प्रमुख हिंदी कवि और ग़ज़लकार

दुष्यंत कुमार त्यागी (27 सितंबर 1931-30 दिसंबर 1975) एक हिन्दी कवि , कथाकार और ग़ज़लकार थे। कवि की पुस्तकों में जन्मतिथि 1 सितंबर 1933 लिखी है, किन्तु दुष्यन्त साहित्य के मर्मज्ञ विजय बहादुर सिंह के अनुसार कवि की वास्तविक जन्मतिथि 27 सितंबर 1931 है।

दुष्यंत कुमार

दुष्यंत कुमार का जन्म उत्तर प्रदेश में बिजनौर जनपद की तहसील नजीबाबाद के ग्राम राजपुर नवादा में हुआ था। जिस समय दुष्यंत कुमार ने साहित्य की दुनिया में अपने कदम रखे उस समय भोपाल के दो प्रगतिशील शायरों ताज भोपाली तथा क़ैफ़ भोपाली का ग़ज़लों की दुनिया पर राज था। हिन्दी में भी उस समय अज्ञेय तथा गजानन माधव मुक्तिबोध की कठिन कविताओं का बोलबाला था। उस समय आम आदमी के लिए नागार्जुन तथा धूमिल जैसे कुछ कवि ही बच गए थे। इस समय सिर्फ़ 44 वर्ष के जीवन में दुष्यंत कुमार ने अपार ख्याति अर्जित की।

उनके पिता का नाम भगवत सहाय और माता का नाम रामकिशोरी देवी था। प्रारम्भिक शिक्षा गाँव की पाठशाला (गीतकार इन्द्रदेव भारती के पिता पं चिरंजीलाल के सानिन्ध्य में) तथा माध्यमिक शिक्षा नहटौर(हाईस्कूल) और चंदौसी(इंटरमीडिएट) से हुई। दसवीं कक्षा से कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया। इंटरमीडिएट करने के दौरान ही राजेश्वरी कौशिक से विवाह हुआ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी में बी०ए० और एम०ए० किया। डॉ० धीरेन्द्र वर्मा और डॉ० रामकुमार वर्मा का सान्निध्य प्राप्त हुआ। कथाकार कमलेश्वर और मार्कण्डेय तथा कविमित्रों धर्मवीर भारती, विजयदेवनारायण साही आदि के संपर्क से साहित्यिक अभिरुचि को नया आयाम मिला।

मुरादाबाद से बी०एड० करने के बाद 1958 में आकाशवाणी दिल्ली में आये। मध्यप्रदेश के संस्कृति विभाग के अंतर्गत भाषा विभाग में रहे। आपातकाल के समय उनका कविमन क्षुब्ध और आक्रोशित हो उठा जिसकी अभिव्यक्ति कुछ कालजयी ग़ज़लों के रूप में हुई, जो उनके ग़ज़ल संग्रह 'साये में धूप' का हिस्सा बनीं। सरकारी सेवा में रहते हुए सरकार विरोधी काव्य रचना के कारण उन्हें सरकार का कोपभाजन भी बनना पड़ा। 30 दिसंबर 1975 की रात्रि में हृदयाघात से उनकी असमय मृत्यु हो गई। उन्हें मात्र 44 वर्ष की अल्पायु मिली।

1975 में उनका प्रसिद्ध ग़ज़ल संग्रह'साये में धूप' प्रकाशित हुआ। इसकी ग़ज़लों को इतनी लोकप्रियता हासिल हुई कि उसके कई शेर कहावतों और मुहावरों के तौर पर लोगों द्वारा व्यवहृत होते हैं। 52 ग़ज़लों की इस लघुपुस्तिका को युवामन की गीता कहा जाय, तो अत्युक्ति नहीं होगी। इसमें संगृहीत कुछ प्रमुख शेर हैं-

यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है, चलो यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए।

मत कहो आकाश में कुहरा घना है, यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है।

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए, इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही, हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

कैसे आकाश में सूराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।

खास सड़कें बंद हैं कबसे मरम्मत के लिए, ये हमारे वक्त की सबसे सही पहचान है।

मस्लहत आमेज़ होते हैं सियासत के कदम, तू न समझेगा सियासत तू अभी इंसान है।

कल नुमाइश में मिला वो चीथड़े पहने हुए, मैंने पूछा नाम तो बोला कि हिंदुस्तान है।

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए, इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही, हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

कैसे आकाश में सूराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।

खास सड़कें बंद हैं कबसे मरम्मत के लिए, ये हमारे वक्त की सबसे सही पहचान है।

मस्लहत आमेज़ होते हैं सियासत के कदम, तू न समझेगा सियासत तू अभी इंसान है।

कल नुमाइश में मिला वो चीथड़े पहने हुए, मैंने पूछा नाम तो बोला कि हिंदुस्तान है।

होने लगी है जिस्म में जुम्बिश तो देखिए, इस परकटे परिंदे की कोशिश तो देखिए।

गूँगे निकल पड़े हैं जुबाँ की तलाश में, सरकार के ख़िलाफ़ ये साज़िश तो देखिए।

एक जंगल है तेरी आँखों में, मैं जहाँ राह भूल जाता हूँ।

तू किसी रेल-सी गुजरती है, मैं किसी पुल-सा थरथराता हूँ।

^ कृतियाँ

एक कंठ विषपायी (काव्य नाटक)

और मसीहा मर गया (नाटक)

सूर्य का स्वागत, आवाज़ों के घेरे, जलते हुए वन का बसंत (काव्य संग्रह)

छोटे-छोटे सवाल, आँगन में एक वृक्ष, दुहरी जिंदगी (उपन्यास)

मन के कोण (लघुकथाएँ)

साये में धूप (ग़ज़ल संग्रह)

कविता	काव्य नाटिका	नाट्य	गजल	छोटी कहानियाँ	उपन्यास
कहाँ तो तय था	एक कण्ठ विषपायी	और मसीहा मर गया	साये में धूप	मन के कोण	छोटे-छोटे सवाल
कैसे मंजर					आँगन में एक वृक्ष
खंडहर बचे हुए हैं					दुहरी जिंदगी

	शहतीर है					
	ज़िंदगानी का कोई मकसद					
	मुक्तक					
	आज सड़कों पर लिखे हैं					
	मत कहो, आकाश में					
	धूप के पाँव					
	गुच्छे भर अमलतास					
	सूर्य का स्वागत					
	आवाजों के घेरे					
	जलते हुए वन का वसन्त					

आज सड़कों पर					
आग जलती रहे					
एक आशीर्वाद					
आग जलनी चाहिए					
मापदण्ड बदलो					
कहीं पे धूप की चादर					
बाढ़ की संभावनाएँ					
इस नदी की धार में		आवाज़ होनी चाहिए		कौन कहता है आसमान में	
हो गई है पीर पर्वत-सी तू किसी रेल सी					

संभावनाएँ					
इस नदी की धार में		आवाज़ होनी चाहिए		कौन कहता है आसमान में	
हो गई है पीर पर्वत-सी तू किसी रेल सी गुज़रती है					

प्रमुख कविताएँ

दुष्यंत कुमार की प्रमुख कृतियां- 'कहाँ तो तय था', 'कैसे मंजर', 'खंडहर बचे हुए हैं', 'जो शहतीर है', 'ज़िंदगानी का कोई', 'मकसद', 'मुक्तक', 'आज सड़कों पर लिखे हैं', 'मत कहो, आकाश में', 'धूप के पाँव', 'गुच्छे भर', 'अमलतास', 'सूर्य का स्वागत', 'आवाजों के घेरे', 'जलते हुए वन का वसन्त', 'आज सड़कों पर', 'आग जलती रहे', 'एक आशीर्वाद', 'आग जलनी चाहिए', 'मापदण्ड बदलो', 'कहीं पे धूप की चादर', 'बाढ़ की संभावनाएँ', 'इस नदी की धार में', 'हो गई है पीर पर्वत-सी' 'मैं जिसे ओढ़ता-बिछाता हूँ', ' मरना लगा रहेगा यहाँ जी तो लीजिए', ।